Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XII, Issue No. 23, October-2016, ISSN 2230-7540

अवध का भाग्य निर्माण

Dr. Manjay PD. Kashyap*

Assistant Teacher, Lakhisarai (Government of Bihar) Singer, A.I.R. and Durdarshan, Patna, Bihar (Government of India), Gold Medalist-Patna College, Patna University, Patna, Bihar

सार – *जैसा कि पूर्व से विदित है कि अवध ऐसे भ्रष्टाचार तथा शासन सम्बन्धी बुराईयों का दृश्य बन गया था, जो कर्नाटक से भी बढ़कर था। सर जॉन मेकफर्सन की सरकार ने उन्हें हटाने का कोई प्रयत्न नहीं किया। उसकी सरकार को कार्नवालिस ने "अत्यन्त घृणित भ्रष्टाचार की व्यवस्था बतलाया है। परन्तु अवध के वफर राज्य का कम्पनी के लिए सामरिक महत्व था। कम्पनी के हितों का तकाजा था, कि अवध को बंगाल का उत्तरी-पश्चिमी सीमा पर रक्षा की एक मजबूत दीबार बनाया जाय। अवध कार्नवालिस के ध्यान से बच नहीं सका। नवाब आसफुद्दौला के मंत्री हैदरबेग के साथ उसने भेंट की। उसने कार्नवालिस से प्रार्थना की कि नवाब बजीर के राज्य में स्थित कम्पनी के सिपाहियों के बड़े भाग को तुरन्त हटा लिया जाय। कार्नवालिस उस बात पर राजी हो गया कि नवाब वजीर यदि अपना कर समय पर दिया करे तो यह घटाकर 74 से 50 लाख कर दिया जायेगा। परन्तु उसके कम्पनी के फौजी दस्तों को हटाने से इन्कार किया।*

----------X----------

1794 ई0 में हैदरबेग की मृत्यु के बाद सुधार की सारी आशाएँ जाती रही। 1797 ई0 में आसफउद्धौला के मरने के बाद सर जॉन ने उत्तराधिकार के एक झगड़े में हस्तक्षेप किया। यह झगड़ा वजीर अली जिसे आसफउद्धौला अपना बेटा और उत्तराधिकारी समझता था और मृतक नवाब के सबसे बड़े भाई सआदत अली के बीच था। 21 जनवरी 1798 ई0 को शोर ने सआदत अली को गद्दी पर बैठाया और उसके साथ संधि की। इसके अनुसार अंत में यह फैसला हुआ कि सालाना सहायक कर बढ़ाकर 76 लाख रूपये कर दिया जाय और इलाहावाद का किला अंग्रेजों को दे दिया जाय। साथ ही नवाब ने अंग्रजों को 12 लाख रूपये क्षतिपूर्ति के रूप में देने का वचन दिया। यह उसे मसनद पर बैठाने के खर्च में लगाया जायेगा। उसने यह भी वचन दिया कि बिना उनकी सम्मति के वह किसी विदेशी राज्य से पत्र-व्यवहार नहीं करेगा। यूरोपियों को अपनी नौकरी में नहीं रखेगा और किसी को अपने राज्य में बसने नहीं देगा। सिंहासनच्युत वजीर अली को बनारस से हटा दिया गया और उसने 1.5 लाख रूपया सालाना पेंशन देने का बचन दिया, अपने भाई मृत नवाब की प्रसिद्ध संतान को उसने उचित जीविका निर्वाह योग्य साधन देने का वचन दिया। "अवध का नवाब वजीर के साथ इस समझौते के लिए इंग्लैण्ड के अधिकारियों ने सर जॉन को बधाई दी, परन्तु इससे भ्रष्ट शासन का न तो सुधार हो सका और न राज्य के दुःखी किसानों का कष्ट दूर हो सका। "शासन से अयोग्यता, भ्रष्टाचार एवं अत्याचार का बोध" होता था।

इस प्रकार एकता के अभाव तथा आन्तरिक कलह क्षत-विक्षत होने के कारण अवध वेलेस्ली के साम्राज्यवाद का षिकार बन गया। भारतवर्ष में अपने आने के बाद शीध्र ही वेलेस्ली ने 23 अक्टूवर, 1798 ई0 को अवध के रेजिडेण्ट को एक पत्र लिखा, उसमें उसने अवध को कम्पनी के पक्के आधिपत्य अधीन करने का दृढ़ संकल्प प्रकट किया। परन्तु उसके कार्यान्वित होने के पहले वजीर अली ने जो बनारस के निकट रहता था। बिटिश रेजिडेन्ट चेरी को मार डाला। ब्रिटिश सेना ने उसे खदेड़कर गिरफ्तार किया और उसे फोर्टविलियम भेज दिया गया। वहाँ वह 1817 ई0 तक जेल में रहा। वेलेस्ली अवध के नवाब पर विष्वासघात (राजद्रोह) अथवा अवज्ञा का आरोप नहीं लगा सकता था। जैसा उसने कर्नाटक के मामले में किया था। अवध का शासक कंपनी के प्रतिसच्चे था और सहायक कर की किस्त समय पर बराबर दी जाती थी। परन्तु अफगानिस्तान के शासक जमानशाह के हितों के कारण वेलेस्ली को अवध के नवाब से एक मांग करने का अच्छा मौका मिला। उसने मांग की कि अवध का नवाब अपने सिपाहियों को हरा दे, केवल उतनी ही सेना रखें जितनी टैक्सों की वसूली तथा राज्य के दूसरे शासन-संबंधी मामलों के लिए आवश्यक हो। कम्पनी की सेना को काफी बढ़ा दिया जाय।

नवाब ने विरोध किया परन्तु कंपनी के रेजिडेन्ट स्कॉट के दबाने से उसने 12 नवम्बर 1798 ई0 को गद्दी पर से हट जाने की अपनी इच्छा जाहिर की। सिंहासन त्याग के इस प्रस्ताव में

www.ignited.in

नवाब वजीर का चाहे कुछ भी विचार हो वेलेस्ली ने कोर्ट ऑफ़ डायरेक्टर्स को इस प्रकार सूचित किया "यह मेरा इरादा है, कि इस घटना से जितना हो सके उतना लाभ उठाया जाय और वजीर की राय से मैं अवध के प्रति और उसके अधीनस्थ इलाकों में कम्पनी की एक मात्र सजा स्थापित करने का आशा करता हूँ। नहीं तो कम-से-कम इस दिशा में मुझे अपने हितों की सुधरे हुए तथा स्थायी आधार पर कायम करने की आशा है। "परन्तु अवध के मसनद से नवाब वजीर के लड़को को हटाकर वेलेस्ली ने जो भविष्य की कठिनाईयों को हटाने का प्रयत्न किया। इससे नवाब वजीर अपने सिंहासन त्याग के वचन से हट गया। इस पर वेलेस्ली "अत्यन्त क्षुब्ध" हुआ और नवाब वजीर को उसने कड़ी चेतावनी दी पहली संधियों का सहारा लेकर नवाब वजीर ने कई उचित आपत्तियाँ की परन्तु वेलेस्ली ने मानने से बिल्कुल इंकार कर दिया। नवाब को उसकी मांग स्वीकार करने के लिए दबाया गया। यहाँ तक ही बात नहीं रही। वेलेस्ली ने 10 नवम्बर-1801 ई0 को उसे संधि करने के लिए मजबूर किया। इसके अनुसार उसने अंग्रेजों को अपने राज्य का आधा हिस्सा जिसमें रोहिलखंड और निचला दोआब (अर्थात गंगा और यमुना के बीच की जमीन) पड़ता था दे दिया। इस प्रकार व्यावहारिक दृष्टि से अवध बिल्कुल अंग्रेजों के अधीन चला गया। कम्पनी को संधि से बड़े लाभ हुए। ऑवेन लिखता है- "हमारी सामरिक सीमा का परिषोधन तथा न नवाब का प्रादेषिक पृथक्करण केवल बड़ी योजना के भाग ही नहीं थे बल्कि विशेषकर ऐसी संकटमय परिस्थिति में इन कारवाईयों का अपने स्वतः भी बहुत बड़ा महत्व था। किन्तु वेलेस्ली ने नवाब वजीर के साथ बड़ा अनुचित व्यवहार किया। वेलेस्ली का पक्षपाती आलोचक सर अल्फ्रेड लियाल लिखता है कि अवध के मामले में वेलेस्ली ने "अपने मित्र की भावनाओं और हितों को इस प्ररकार ब्रिटिश नीति के सर्वोपरि हितों के अधीन किया। जिसमें धैर्य सहनशक्ति तथा उदारता का बहुत कम अंश था। कोर्ट ऑफ़ डायरेक्टर्स ने उसके कार्य की आलोचना की उसकी सम्पूर्ण नीति की कुंजी साम्राज्यवादी प्रसार थी। यह भी ध्यान में रखना चाहिये कि वेलेस्ली ने देशी शासन व्यवस्था को हटाकर अच्छे तथा सभ्य शासन का फल लाने का वचन दिया था, किन्तु अवध उन सारे फलों का उपभोग न कर सका बल्कि सहायक प्रबंध के हानिकारक फल हुए।

सन्दर्भ ग्रंथ

(1) कम्प्रीहेन्सीव हिस्ट्री-जिल्द-2 पृष्ठ-717

(2) वेलेस्ली डिस्पेचेज- पृष्ठ-18

(3) फॉल ऑफ़ द मुगल इम्पायर वौल्यूम-2, पृष्ठ-527

(4) कैम्ब्रिज हिस्ट्री-जिल्द-5, पृष्ठ -602

(5) फ्रेंकलिन-उद्घृत पुस्तक- पृष्ठ-98

(6) सरकार, फॉल आफ द मुगल इम्पायर, जिल्द-3, पृष्ठ-442

(7) कैम्ब्रिज हिस्ट्री, जिल्द-5, पृष्ठ-603

Corresponding Author

Dr. Manjay PD. Kashyap*

Assistant Teacher, Lakhisarai (Government of Bihar) Singer, A.I.R. and Durdarshan, Patna, Bihar (Government of India), Gold Medalist-Patna College, Patna University, Patna, Bihar